

श्री पंचमेरु पूजा एवं अर्घ

मानुषोत्तरपर्वत



ढाई द्वीप में पाँच मेरु पर्वत हैं (१.सुदर्शन मेरु २.विजय मेरु ३.अचल मेरु ४.मंदिर मेरु ५. विद्युन्माली मेरु) इसमें बीच का सुदर्शन मेरु एक लाख योजन का है। बाकी चार मेरु ८४००० योजन ऊँचे हैं। इन एक एक मेरु पर १६-१६ जिनालय हैं। सब मिला कर ८० जिनालय हैं।

ये पर्व वर्ष में चार समय मनाये जाते हैं

१. आषाढ़ सुदी अष्टमी से आषाढ़ सुदी पूर्णमा तक
२. भाद्रपद सुदी पंचमी से भाद्रपद सुदी नवमी तक
३. माघ सुदी पंचमी से माघ सुदी नवमी तक
४. चैत्र सुदी पंचमी से चैत्र सुदी नवमी तक

अर्घ

आठ दरबमय अर्घ बनाय, द्यानत पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥
पाँचों मेरु असी जिन धाम, सब प्रतिमाको करों प्रणाम।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि अस्सी जिन चैत्यालयस्यः जिनविम्बेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु पूजा



तीर्थकरों के नहवन-जलतै, भये तीरथ सर्वदा।
तातै प्रदच्छन देत सुरगन, पंचमेरुन की सदा॥
दो जलधि ढाई द्वीप में, सब गनत-मूल विराजहीं।
पूजाँ असी जिनधाम-प्रतिमा, होहिं सुखदुख भाजहीं॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र अवतर अवतर संवीषद् ।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र तिषठ तिषठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र मम सन्निहितों भव भव वषद् ।



शीतलमिष्ट सुवास मिलाय, जलसौं पूजाँ श्रीजिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करों प्रणाम।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥



जल केश करपूर मिलाय, गंधसौं पूजाँ श्रीजिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥ पाँचों ...

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥



अमल अखंड सुगंध सुहाय, अच्छतसौं पूजाँ जिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥ पाँचों ...

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥



वरन अनेक रहे महकाय, फूलनसौं पूजाँ जिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥ पाँचों ...

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥



मनवांछित बहु तुरत बनाय, चरुसौं पूजाँ श्रीजिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥ पाँचों ...

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥



तमहर उज्ज्वल ज्योति जगाय, दीपसौं पूजाँ श्रीजिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥ पाँचों ...

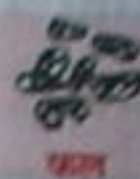
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥



खेऊं अगर अमल अधिकाय, धूपसी पूजा श्रीजिनराय।

महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥ पाँचौं...

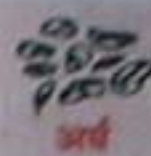
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥१७॥



सुरस सुवर्ण सुगंध सुभाय, फलसी पूजा श्रीजिनराय।

महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥ पाँचौं...

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१८॥



आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजा श्रीजिनराय।

महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥ पाँचौं...

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१९॥

प्रथम सुदर्शन-स्वामि, विजय अचल मंदिर कहा।

विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जग में प्रकट ॥१०॥

केसरी छन्द : प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भूपर छाजै।

चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी ॥२॥

ऊपर पांच शतक पर सोहै, नन्दन वन देखत मन मोहै ॥ चैत्या... ॥३॥

साढ़े बासठ सहस ऊंचाई, वनसुमनस शोभे अधिकारुं ॥ चैत्या... ॥४॥

ऊँचा जोजन सहस छत्तीसं, पांडुकवन सोहै गिरिसीसं ॥ चैत्या... ॥५॥

चारों मेरु समान बखानों, भूपर भद्रसाल चहुँ जानो।

चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी ॥६॥

ऊँचें पांच शतक पर भाखे, चारों नन्दन वन अभिलाखे।

चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी ॥७॥

साढ़े पचपन सहस उतंगा, वन सौमनस चार बहुरंगा।

चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी ॥८॥

उच्च अठाईस सहस बताये, पांडुक चारों वन शुभ गाये।

चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी ॥९॥

सुर नर चारन वन्दन आवै, सो शोभा हम किह मुख गावै।

चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी ॥१०॥

दोहा:- पंचमेरु की आरती पढ़ै सुनै जो कोय।

'द्यानत' फल जानै प्रभु तुरत महासुख होय ॥११॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।